दीपक तिवारी

1)

मैं कभी अच्छा प्रेमी नहीं बन सका
क्योंकि मैं थक गया
अपने माशूक़ की ज़िल्लतें, गालियाँ
और बेरुख़ी को सहते–सहते ।

2)

दुत्कार के रूप में
मेरे हृदय को कुचला नहीं गया
बल्कि उसपे फैंके गए
बड़े–बड़े बम के गोले ।

3)

वो मर्द–मर्द में में फ़र्क़ नहीं कर पाई
ठीक वैसे ही जैसे
क़साई–खाने में सारे जानवर
देखे गए एक ही नज़र से ।

4)

विरह की दसों अवस्थाओं से
गुज़रने के बाद
मैंने सिर्फ़ इतना जाना
कि मैं स्वयं से भी ज़्यादा
'तुम्हें प्रेम करता हूँ' ।।

5)

किसी के प्रेम में एक बार
छला जाना हो सकती है चूक,
किंतु बार बार छला जाना
होता है अपराध !!

5)

एक बार प्रेम में ठुकराए गए पुरुष
दोबारा किसी स्त्री से
उतना ही घुल–मिल पाते हैं
जितना किसी ठहरे हुए जल में
गिर के घुल–मिल पातीं है
सरसो के तेल की कुछ बूँदे

7)

प्रेम एक हत्यारे का नाम है
मैंने जब जब भी इसकी तरफ क़दम बढ़ाया
इसने सिर्फ़ मेरी आत्मा पे प्रहार किया
प्रेम से मुझे सिवाए पीड़ा के कुछ नही मिला !!

8)

मैं बहुत शरीफ़ तो नही
लेकिन इतना शरीफ़ ज़रूर हूँ
कि किसी हत्यारे को हत्यारा जानते हुए
उस से बने हुए सम्बन्ध को तोड़ने में देरी न करूं !!